Omniscient
(An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal)
Vol 1 Issue 4 December 2023 EISSN: 2583-7575

हिंदी नाटकों में गांधी चेतना : सत्य और अहिंसा

शिवसर्जन होनाजी टाले

हिंदी विभाग, महात्मा ज्योतिबा फुले महाविद्यालय, मुखेड़, नांदेड

Corresponding author: taleshivsarjan@gmail.com

Available at https://omniscientmjprujournal.com

सारांश

हिंदी नाटकों में सत्य और अहिंसा का जो भाव स्थापित हुआ है उसके पीछे गांधी जी की अहम भूमिका रही है। जिसके कारण हिंदी साहित्य की सभी विधा में उनके चेतना का प्रभाव दिखाई देता है। हिंदी नाटकों में सत्य और अहिंसा यह दो भाव प्रमुखता से प्रकट हुए हैं, जयशंकर प्रसाद का 'विशाख', रामकृष्ण भट्ट रामकृष्ण भट्ट का 'पार्वती' नाटक, हरी कृष्णप्रेमी का 'विहान', सियाराम शरण गुप्त का 'पुण्य पर्व', मैथिलीशरण गुप्त जी का गीति नाट्य 'कर्बला', उदय शंकर भट्ट का 'सगर विजय', रघुवीर शरण जी का 'भारत माता', विष्णु प्रभाकर का 'स्वाधीनता संग्राम में एक सैनिक', वृंदावन लाल वर्मा का 'नीलकंठ', विष्णु प्रभाकर का 'हमारा स्वाधीनता संग्राम', भगवती चरण वर्मा का 'बुझता दीपक', दुर्गादास गुप्त का 'महामाया', धर्मवीर भारती का 'अंधा युग', जयशंकर प्रसाद का 'आजादशत्रु' आदि नाटकों में भारतीय गुलामी की बेड़ियाँ को मुक्त करना, सत्य और अहिंसा के रूप में गांधी चेतना को भारतीय समाज में प्रस्तावित करना इनका मूल हेतु रहा है। गांधी जी के सभी तत्वों को हिंदी साहित्य में स्वीकृत किया गया है। जिसका प्रभाव साहित्य के हर पात्र पर दिखाई देता है। सत्य, अहिंसा, करुणा, दया का संदेश अपने रचनाओं के माध्यम से हिंदी साहित्यकार देते हैं।

बीज शब्द: *सत्य और अहिंसा, अहिंसा से समाधान का हल, हिंदी नाटक और गांधीजी, सत्य से विजय प्राप्त।*

सत्य गांधी जी के जीवन और दर्शन का ध्रुवतारा है। सत्य शब्द की उत्पत्ति 'सत्' धातु से हुई है। 'सत्' का मूल अर्थ 'त्रिकालबाधित एक रूप में अस्तित्व में रहने वाली वस्तु' होता है। उसी को अपना हत्यार मानकर संपूर्ण जीवन सत्य को साथी बनाकर जीवन यापन करना कठिन ही नहीं नामुमकिन है। सत्य कोई स्थिर गुण नहीं है। सत्य के लिए खोज की ऐसी प्रक्रिया है, जो आगे बढ़ती ही जाती है। गांधी जी के सूत्रों के आधार पर श्री सुमन कहते हैं कि "मनुष्य एकांत में जिसे सच्चे मन से सत्य समझता हो उस पर दृढ़ रहने, उसे ही प्रकट करने एवं तद्नुसार जीवन में आचरण करने से धीरे-धीरे व्यापक सत्य की प्रतिष्ठा स्वत होती है। पहले उसमें दया, क्षमा और करूणा आती है। फिर प्रेम और अहिंसा की मात्रा वृद्धि के साथ-साथ सत्य का प्रकाश उसमें होता है।"१ (हिंदी साहित्य में गाँधी चेतना – डॉ.शर्मा – पृष्ठ क्र. 329) सत्य और अहिंसा के पद पर चलने वाले इन महान व्यक्तित्व का साया हिंदी साहित्य पर पड़ना स्वाभाविक था। हिंदी के समकालीन तथा आधुनिक कवियों, उपन्यासकार, कहानीकार, निबंधकार तथा अन्य विधाओं के रचनाकारों

में इनके तत्वों को लेकर लिखा गया। गांधी के विचारों का प्रभाव हिंदी साहित्य तथा साहित्यकारों पर सत्य और अहिंसा के रूप में अधिक रहा। हिंदी नाटककारों पर भी गांधी चेतना का प्रभाव रहा। गांधी के विचारों से प्रभावित द्रशमान हुए तीन बंदर तथा प्रेम, सत्य, अहिंसा, दया, करूणा जैसे विचारों को नाटकों में स्थान दिया गया। अंग्रेज शासक का विरोध, आजादी की भावना, गुलामी प्रवृत्ति से छुटकारा आदि भावनाओं से प्रेरित होकर हिंदी साहित्य लिखा गया। हिंदी नाटकों की भूमिका भी आजाद भारत की रही थी। हिंदी नाटकों के प्रवर्तक भारतेंदु हरिश्चंद्र जी ने 'अंधेर नगरी' तथा 'भारत दुर्दशा' जैसे नाटकों से अंग्रेजों के प्रति विरोध और आक्रोश की भावनाओं को रेखांकित किया। समाज में जनजागृति का कार्य उनके नाटकों ने किया। वहीं पहेली पहल हिंदी साहित्य में गांधी चेतन की रही है। इस काल में नुक्कड़, एकांकी तथा नाटकों का प्रसारण भारत की गाँव-गाँव तथा गलियों में प्रस्तुतिकरण के रूप में होने लगी। नाटक गांव-गांव खेले जाने लगे। लोगों में देशाभिमान, गुलामी प्रवृत्ति, तथा होने वाले अन्याय और अत्याचार को प्रस्तुत करने लगे।

जयशंकर प्रसाद के नाटकों में महात्मा गांधी के विचारों की प्रभावशीलता है। 'विशाख' के 'प्रेमानंद' गांधीवत ही चरित्र हैं। सत्य की महत्ता का निरूपण 'जन्मेजय का नागयज्ञ' में भी किया गया है। यद्यपि यह नाटक पौराणिक परिवेश को लेकर चला है। तथापि श्री कृष्ण का अर्जुन को दिया गया उपदेश गांधी जी की भावधार की अभिव्यक्ति जैसा प्रतीत होता है। उन्होंने सत्य, अहिंसा, प्रेम, दया, विश्व शांति का संदेश दिया है। तथा स्वयं को शाश्वत संघ का अनुयाई बताया है। सुश्रवा को समझाते हुए कहते है- "सत्य को सामने रखो, आत्मबल पर भरोसा रखो, न्याय की मांग करो।"२(विशाख – जयशंकर प्रसाद - पृष्ठ क्र. 77) प्रसाद जी कृत 'तितली' में भी ग्रामीण जीवन के चित्रण पर प्रसाद जी का अधिक ध्यान है। तितली और शैल मिलकर ग्राम सेवा और शिक्षदान का पवित्र कार्यक्रम स्वीकार करती है। प्रसाद जी ने इसमें संकेत दिया है कि, सामान्य व्यवस्था के अवसान पर ही ग्रामीण सभ्यता का उत्थान हो सकता है। बद्रीनाथ भट्ट लिखित 'वेन चरित्र' में अत्रि के माध्यम से सत्य की अभिव्यक्ति की गई है। उनका कथन है कि-"जहां राजा-प्रजा में अनबेल होती है, वहां गहरी उत्तल-पुथल होती है, नाश होता है और पुनर्जन्म होता है। इस उत्तल-पुथल में जीत उसी की होती है, जिसकी तरफ सत्य हो।"३(वेन चरित्र – श्री.बद्रीनाथ भट्ट - पृष्ठ क्र. 23)रामकृष्ण भट्ट का 'पार्वती' नाटक भी सत्य निष्ठा का परिचय देता है। परमानंद को सरल व सत्यनिष्ठ चित्रित किया गया है। उनके 'विक्रमादित्य' नाटक में सत्य और अहिंसा की स्वीकृति है। सत्य को दबाने वाला कभी सुखी नहीं हो सकता। इस

आशय को लेकर लक्ष्मी नारायण लाल के नाटक 'सिंदूर की होली' बहुत चर्चित नाटक रहा। जिसका एक पत्र माहिरअली असत्यआचरण के कारण अंदर ही अंदर जलता रहता है।एक दिन वह दृढ़ निश्चय कर लेता है कि, वह पाप स्वीकार कर लेगा तथा सब सच-सच बता देगा, क्योंकि "एक बार फांसी चढ़ जाना, रोज के फांसी से अच्छा है।"४(सिंदूर की होली – श्री. लक्ष्मी नारायणा लाल - पृष्ठ क्र. 31)गांधी जी अपना संपूर्ण जीवन सत्य की राह पर चले। इस रास्ते का चुनाव करना मौत के बराबर है। जिंदगी भर सच बोलते रहना ही समस्याओं को उत्पन्न करना है। इतनी कठिन परिस्थिति में भी वह ना डगमगाए, ना परेशान हुए। सत्य का पथ हमेशा से ही कांटों से भरा हुआ होता है। इसीलिए गांधी जी ने कहा था 'सत्य परेशान हो सकता है, लेकिन पराजित नहीं।' यह उक्ति आज के जमाने में जैसे की तैसी लागू होती है।

राष्ट्रीय आंदोलन पर लिखा गया हरिकृष्ण प्रेमी का 'स्वर्ण विहान' बहुत ही सशक्त नाटक है। इसमें अहिंसा के प्रति अहम भूमिका को रेखांकित किया गया। उनका दूसरा नाटक 'शक्तिसाधना' अहिंसा के ऊपर लिखा गया नाटक है। उसमें वह कहते हैं कि "भारत में इस समय जितने भी धर्म प्रचलित है, वे भी अहिंसा को मानव का उच्चतर धर्म मानते हैं। लेकिन अहिंसा को सच्चे अर्थ में समझने की आवश्यकता है। अहिंसा का अर्थ सहशीनता और कायरता नहीं है।"५(शक्ति साधना – हरिकृष्ण प्रेमी - पृष्ठ क्र. 40)अहिंसा की भावना समकालीन नाटककारों में बहुत जादा पाई जाति है। अहिंसावादी विचारधारा से प्रभावित होना उस काल की मांग थी। गाँधीवादी काल में असहकार आंदोलन तथा अन्य आंदोलन के माध्यम से अंग्रेजों को परेशान करने का कार्य महात्मा गांधी जी ने किया था।

अहिंसा के ऊपर लिखे गए नाटकों में महात्मा ईसा,नक्शे का रंग, रेवा,सगर विजय, बुझता दीपक,बापू के प्यारे, पुण्य पर्व,हमारा स्वाधीनता संग्राम आदि कई रचनाओं का निर्माण हुआ। 'पुण्य पर्व' नाटक के रचयिता पर प्रस्तुत करते हैं। मैथिलीशरण गुप्त जी अपने गीति नाट्य 'कर्बला' में सत्य और अहिंसा का पाठ पढ़ाते हैं। 'कर्बला' में हिंदू और मुसलमान को सत्य व अहिंसा के रूप में दृष्टि को परिवर्तित करने की राह देते हैं। मुसलमान के प्रति वह कहते हैं। उनके धर्म ग्रंथो के इस उपदेश की बात वह करते हैं ।"कत्ल करने की अपेक्षा दोस्त बना लेने में अधिक फायदा है।"६ (कर्बला – मैथिलीशरण गुप्त - पृष्ठ क्र. 39)जिससे अहिंसा की पुकार उस समाज को करते हैं। चंद्रगुप्त विद्यालंकार अपने नाटक 'रेवा' में सत्य और अहिंसा के बारे में लिखते हैं। नाटक का पात्र 'आचार्य पुंडलिक' शस्त्र विजय की अपेक्षा हृदय की विजय को श्रेष्ठ मानते हैं। उदय शंकर भट्ट के नाटक 'सगर विजय' मैं दुर्गम नामक पात्र भी हृदय की विजय को

श्रेष्ठ और अंतिम साध्य मानते हैं। रघुवीर शरण का 'भारत माता' नाटक में अहिंसा को सर्वशक्तिमान मानता है। यह वह शक्ति है जिसमें आत्म बल का हुंकारता है। विष्णु प्रभाकर का नाटक 'हमारा स्वाधीनता संग्राम' में एक सैनिक के माध्यम से शपथ ही दिलाई जाती है कि वह जब तक संघ का सदस्य रहेगा तब तक वह मन,वचन और कर्म से अहिंसात्मक रहने का प्रयत्न करेगा। दूसरी तरफ 'बुझता दीपक' में भी भगवती चरण वर्मा अहिंसा का वर्णन करते हैं। 'नीलकंठ' नाटक में श्री वृंदावन लाल वर्मा कहते हैं कि "हम सदा कम से कम एक काम परसेवा का नित्य करेंगे जिसके पलटे में हम कुछ नहीं चाहते।"७ (नीलकंठ –वृन्दावनलाल वर्मा - पृष्ठ क्र. 98) गांधी के विचारों की फसल हिंदी नाटकों में बहुत ही फली-फूली हुई है। जिससे उपजाऊ भूमि से उपज कर्म के आधार पर है। सत्य और अहिंसा का नाता हर इंसान में आज बसा हुआ मिलता है। सभी धर्म का सार हिंसा का विरोध है। सत्य का पथ भले ही कांटों से भरा क्यों ना हो लेकिन आखिर में उसे फूल ही मिलते हैं। जिसका सुगंध संपूर्ण जीवन तथा मृत्यु के पश्चात भी द्रवित होता है।

गांधी जी ने अहिंसा को प्रेम की पराकाष्ठा, हिंसा का जवाब और वीर का लक्षण माना है। अर्थात अहिंसा की आवश्यकता हिंसा और घृणा से प्रतिकार करने के लिए पड़ती है। किंतु यह एक प्रकार का निशस्त्र प्रतिकार होगा, तथा इसका चालक लाचारी, कायरताविहीन अदम्य साहसी योद्धा ही हो सकता है। बुजदिल इसकी शक्ति को सम्हाल ही नहीं सकेगा। हर किसी के बस की यह बात नहीं होगी। दूसरी बात यह एक सामाजिक चीज है, जो समाज मरना जानता है, वहीं इसका सफल प्रयोग कर सकता है। तथा दुखी जगत की पीड़ा को निर्मूल कर सकता है। ठीक उसी प्रकार हिंदी नाटकों में गांधी जी की अहिंसा को रेखांकित किया गया है। जहां पर मानवीय दृष्टिकोण को महत्व प्रदान किया गया। जिससे प्राणियों पर भी दया दिखाने का काम आज जमाना करता है। इसी मानवतावादी दृष्टिकोण के ऊपर लिखा श्री प्रताप नारायण श्रीवास्तव का 'विसर्जन' नाटक महत्वपूर्ण है। जहां पर देवकीनंदन खत्री की दलीलों से प्रभावित होकर परिस्थितियों की मार खाकर मिल मालिक अपनी गलती को मानते हैं, तथा मजदूरों का शोषण के प्रति प्रवृत्ति त्यागने की प्रतिज्ञा करते हैं। अब्दुल मजीद का कथन है कि, "फर्ज और मैं भी खुद को हाजिर नाजिर समझकर सही होशहवास से इकरार करता हूं कि आज से मेरा मजहब इंसान की खिदमत करना और इंसान समझना होगा।"८ (विसर्जन – श्री.प्रतापनारायण श्रीवास्तव - पृष्ठ क्र.27)उपर्युक्त कथन से स्पष्ट रूप से मानवता की दुहाई देता है। जिससे अहिंसा रूपी भाव मानव में जागृत हुआ है। धर्मवीर भारती का नाटक 'अंधायुग' से अहिंसा की स्थापना पर ही बल देता है। त्याग,

बलिदान, आत्मोत्सर्ग पर ही देशहित, विश्वहित में अपना सर्वस्व अर्पण करने की भावना ही मानव जीवन को सार्थक बनाती है। हिंदी नाट्य साहित्य में भी इस भावना का सुंदर प्रतिफल हुआ है। महात्मा जी ने इस परंपरागत आदर्श को आचरण में लाकर एक नया मोड़ दिया, एक नई ताजगी से भर दिया। सत्याग्रही का यह मूल मंत्र हो गया कि वह अन्याय, अत्याचार के विरोध में अपना सर कलम कर सकता है, लेकिन झुका नहीं सकता। इसी भावना से अभय की उच्चवस्था सहज ही प्राप्त हो जाती है। कर्तव्य पालन करते हुए जो बलिदान और शहीद हो जाता है। उनकी जय जयकार नित्य नियम से दिनों दिन आने वाली पीढ़ी को दुहाई देती रहेगी। दुर्गादास गुप्त के 'महामाया' नाटक में आत्म बलिदान की विचार भावना को लोगों में व्यक्त करने के लिए निम्नलिखित पंक्तियों कही गयी है -

"प्राण से पूरण करूंगा, देश हित के काज को।

राज तो क्या छोड़ दूं मैं स्वर्ग के सुख साह को।।"९(महामाया – दुर्गादास गुप्त – पृष्ठ क्र. 33)

आगे चलकर वह आत्मबलिदान की महिमा दिग्दर्शित करता है -

"है वीर वही जो मन में नहीं भय खाते।

जीते हैं सदा जो धर्म हेतु मर जाते।।

जो जन्मभूमि की वेदी पै शीश चढाते।

उन्हीं का कविगण सुयश सदा हैं गाते।"१०(महामाया – दुर्गादास गुप्त – पृष्ठ क्र. 65)

भारत गुलामी की बेडियों से जकड़ा हुआ था। उसकाल के साहित्यकार अपनी कला से अहम भूमिका का निर्वाह कर रहे थे। जयशंकर प्रसाद के नाटकों में गांधी चेतना बहुत अधिक रही। उनका 'विशाख' नाटक क्रांति की मशाल ज्वलंत करने वाला था। तब भारत में गांधी जी के माध्यम से सत्याग्रह की शुरुआत हो चुकी थी। रोलेट एक्ट का विरोध हो रहा था। जलियांवाला बाग हत्याकांड से संपूर्ण भारत विह्वल उठा था। जनरल डायर के खिलाफ लोगों के मन में गुस्सा फूट पड़ा था। जनता पर होने वाले अमानुष अन्याय और अत्याचारों का अंत अब आवश्यक था। तभी भारतीय राजनीति में गांधी जी का आगमन हो चुका था। 'विशाख' नाटक का पात्र 'विशाख' को बंदी बनाकर न्यायालय में हाजिर किया गया। सभी न्याय व्यवस्था एकपक्ष की ओर झुकी हुई थी। तभी इस न्यायिक व्यवस्था पर व्यंग करते हुए विशाख कहता है कि "मैं नहीं जानता कि उसे उस समय क्या उत्तर दिया जाता है, जबकि अभियोग ही उल्टा हो और जो अभियुक्त हो वही न्यायाधीश हो।"११ (विशाख – जयशंकर प्रसाद – पृष्ठ क्र. 64)जयशंकर प्रसाद का दूसरा नाटक 'आजादशत्रु' में

बुद्ध के चरित्र का चित्रण किया गया है। बुद्ध के जीवन काल के समस्त धार्मिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक समस्याओं को रेखांकित किया गया है। 'अजातशत्रु' में क्रांति की भावनाओं को ध्वनित करते हुए, क्रांति की मशाल ज्वलंत की गई है। अहिंसा उसका मूल तत्व है। प्रसाद युग में अंग्रेजों के विरोध में जनसाधारण का आक्रोश बहुत अधिक है। प्रसाद जी ने अपने नाटकों का मूल उद्देश्य श्रम और निष्पक्ष न्याय को लिखा।

संक्षिप्त रूप से कहा जाए तो हिंदी नाटकों में सत्य और अहिंसा की अद्वितीय शक्ति को प्रस्तुत किया गया। गांधीजी के सत्य और अहिंसा रूपी तत्वों का लोहा आज भी सर्व मान्य है। सत्य की विचारधार अन्य विचारों से अधिक शक्तिशाली है, और अहिंसा एक मानवीय परमोच्च गुण है। सत्य और अहिंसा को हिंदी साहित्य में गांधीजी के महान तत्वों की ही देन है।

संदर्भ ग्रंथ

हिंदी साहित्य में गाँधी चेतना – डॉ.शर्मा – पृष्ठ क्र. 329

विशाख – जयशंकर प्रसाद - पृष्ठ क्र. 77

वेन चरित्र – श्री.बद्रीनाथ भट्ट - पृष्ठ क्र. 23

सिंदूर की होली – श्री. लक्ष्मी नारायणा लाल - पृष्ठ क्र. 31

शक्ति साधना – हरिकृष्ण प्रेमी - पृष्ठ क्र. 40

कर्बला – मैथिलीशरण गुप्त - पृष्ठ क्र. 39

नीलकंठ –वृन्दावनलाल वर्मा - पृष्ठ क्र. 98

विसर्जन – श्री.प्रतापनारायण श्रीवास्तव - पृष्ठ क्र.27

महामाया – दुर्गादास गुप्त – पृष्ठ क्र. 33

महामाया – दुर्गादास गुप्त – पृष्ठ क्र. 65

विशाख – जयशंकर प्रसाद – पृष्ठ क्र. 64